UTTAR PRADESH

Arun Kumar Shakya
Primary School Nauli Fataubad
Development Area Usawa District Badaun, UP
Email id: arunkumarshakya01@gmail.com

Abstracts

This school was wrought with multiple challenges, such as low attendance of students, poor infrastructure, and absence of parental involvement. In addition the school students were exposed to prone to anti-social elements. The school head and his team conducted a village to identify problems in detail and chalked out strategies for developing various school parameters. Several academic/non-academic activities and sports competition were conducted. Each day, half an hour is allotted for students to read newspaper. This practice influenced even those students who were unable to read. The head attempted an innovation which linked academic credentials with awareness of political processes. Held elections for the post of student's president, for which conditions for election to the post of president and voting right were reserved for those who fulfilled the following conditions: 80% attendance in the school as essential; must remember the tables up to 25, must have knowledge of the prescribed school curriculum and would have completed their home work during a prescribed time period. This resulted in positive impact on student attendance and participation in school activities.

शाला का सन्दर्भ : सामाजिक-आर्थिक सन्दर्भ

इस विद्यालय में मेरी नियुक्ति 02 अगस्त, 2013 को हुई थी। जब मैं इस विद्यालय में नियुक्त हुआ तो इस विद्यालय में मात्र दो अध्यापक कार्यरत थे। उनमें एक इंचार्ज प्रधानाध्यापक एवं एक सहायक अध्यापक संकुल प्रभारी थे। संकुल प्रभारी विभागीय कार्य की अधिकता के कारण विद्यालय में शिक्षण कार्य में सहयोग नहीं दे पाते थे। इंचार्ज प्रधानाध्यापक दूसरे क्षेत्र के होने के कारण एवं प्रधानाध्यापक पद के दायित्व का निर्वहन करने के कारण शिक्षण कार्य में पूर्ण सहयोग नहीं कर पाते थे। विद्यालय के इंचार्ज प्रधानाध्यापक

31, मार्च 2016 में सेवानिवृत्त हो गये। जिसके कारण सम्पूर्ण विद्यालय का दायित्व मेरे पर आ गया। विद्यालय की विपरीत समस्याओं से संघर्ष करते हुए मैंने आगे बढ़ने का प्रयास किया। विद्यालय में नामांकन के सापेक्ष छात्र उपस्थित न्यून (15 से 20 प्रतिशत) रहती थी। उस विद्यालय के नाम से कोई भी अध्यापक विद्यालय में जाने का नाम नहीं लेता था। मेरे कार्यभार ग्रहण करने के बाद विद्यालय की सबसे बड़ी समस्या पीने के पानी की थी। विद्यालय की चाहरदीवारी न होने के कारण आये दिन हैण्डपम्प खराब रहता था। विद्यालय के बच्चे ग्राम में पानी पीने के लिए जाते थे और लौट कर नहीं आते थे तथा रसोइया को भी दूर ग्राम से पानी लाकर खाना बनाना पड़ता था। उसके बाद मैंने पानी की समस्या के लिए हैण्डपम्प को सही कराया जो दूसरे ही दिन कुछ ग्रामवासियों द्वारा खराब कर दिया गया फिर दूबारा सही कराया जिसे फिर खराब कर दिया गया। मैनें लगभग 5–6 बार कोशिश कर हैण्डपम्प सही कराया लेकिन ग्रामवासियों के सहयोग न मिलने के कारण हैण्डपम्प खराब ही रहा। फिर मैनें विद्यालय के रसोई के पास वाले कक्ष में एक कोने पर नल लगवा दिया। जिससे पानी की समस्या का समाधान हो गया। हमारे विद्यालय की स्थापना सन् 2005 को हुई थी। हमारा विद्यालय उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित एवं जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, जनपद बदायूँ द्वारा मान्य परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय है। हमारे विद्यालय गंगा नदी के क्षेत्र के किनारे, जनपद की सीमा पर स्थित है। हमारा विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र में स्थापित है। जिसके कारण विद्यालय की शैक्षिक पृष्ठभूमि ग्रामीण है और बच्चों का शैक्षिक स्तर काफी निम्न था। यहां के कुछ ग्रामवासी अशिक्षित एवं शिक्षा के प्रति रूचि न होने के कारण अपने बच्चों को घरेलू कार्य, जानवर चराने एवं खेती के कार्य में सहयोग कराने में रूचि रखते है जिसके कारण वह अपने बच्चों को विद्यालय में अध्ययन करने हेतु नहीं भेजते है।

शाला का सन्दर्भ : चुनौतियाँ

(1) शिक्षा का स्तर निम्न होना।

(2) बच्चों की विद्यालय में उपस्थित कम होना।

(3) बिना मान्यता के ग्राम में प्राइवेट स्कूल का पनपना।

(4) अभिभावकों का सरकारी स्कूल के प्रति नकारात्मक सोच –जैसे– सरकारी विद्यालय में अध्यापकों का कम होना, सरकारी शिक्षक विद्यालय में पढ़ाते नहीं है। बिना मान्यता के प्राइवेट स्कूल के शिक्षकों द्वारा अभिभावकों को गुमराह करना, की सरकारी स्कूल में बच्चों का भविष्य खराब होता है, क्योंकि प्राइवेट टीचर स्थानीय होता है। गंगा की कटरी एवं सीमावर्ती विद्यालय होने के कारण भययुक्त वातावरण के कारण, जिससे बाहरी अध्यापकों का विद्यालय में नहीं रूक पाना। दबंग प्रवृत्ति के लोगों एवं अभिभावकों की मनमानी आदि।

चुनौतियाँ के समाधान की योजना

1– सबसे पहले एक सम्पर्क पंजिका बनाकर घर–घर जाकर सम्पर्क किया, उनकी समस्याओं को नोट किया तथा उनकी समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया, फिर कुछ सुधार हुआ लेकिन पूर्णतया सफलता नहीं मिली।

2–गतिविधि द्वारा शिक्षण कार्य व खेलकूद में प्रतिभाग कराना, प्रोत्साहन देना, पुरस्कृत करना आदि नवाचार किये, कुछ सफलता मिली और शिक्षा में सुधार हुआ लेकिन उपस्थिति में पूर्णतया सफलता नहीं मिली।

3– पेट्रोल पम्प पर निःशुल्क मिलने वाला अखबार हमने विद्यालय ले जाना शुरू किया तथा ग्रुप बनाकर रोज 30 मिनट बच्चों को पढ़वाने से शिक्षा के स्तर में सुधार हुआ क्योंकि जो बच्चे पढ़ना नहीं जानते उनमें अखबार पढ़ने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई, जिससे शिक्षा में सुधार हुआ।

4– **शैक्षणिक स्तर का चुनाव**– एक दिन मेरे मन में विचार आया कि क्यों न विद्यालय में कुछ नवीन नवाचार किया जाये और मैनें एक नवाचार तैयार किया जिसका नाम **शैक्षणिक स्तर का चुनाव** तैयार किया। (क्योंकि चुनाव के प्रति ग्रामीण अंचलों में जूनून अधिक देखा जाता है। ग्रामवासी किसी भी प्रकार के चुनाव के दौरान कुछ भी करने को तैयार रहते है।)

क्रियान्वयन हेतु रणनीति–

शैक्षणिक स्तर का चुनाव

हमने एक छात्र एवं एक छात्रा के अध्यक्ष पद का चुनाव कराने का विचार किया। उसमें अध्यक्ष पद/मतदाता के लिए कुछ शर्ते लागू की, जो निम्नवत है:–

(1) विद्यालय में छात्र–छात्रा की 80 प्रतिशत उपस्थिति होना आवश्यक है।

(2) छात्र–छात्रा को 25 तक पहाड़े याद होना आवश्यक है।

(3) छात्र–छात्रा को निर्धारित पाठयक्रम का ज्ञान होना आवश्यक है।

(4) छात्र–छात्रा का गृह कार्य पूर्ण होना आवश्यक है।

(5) प्रत्याशी की कक्षा के अतिरिक्त दो प्रस्तावक अन्य कक्षाओं से होने चाहिए।

मतदाता हेतु शर्ते–

(1) मतदान दिवस से पूर्व मतदाता की निरन्तर 10 दिन की उपस्थिति अनिवार्य है।
(2) हिन्दी भाषा का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

परियोजना का विवरण–

अध्यक्ष पद पर एक से अधिक प्रत्याशी होने की स्थिति में विजयी छात्र अध्यक्ष के उपरान्त अन्य प्रतिभागी (द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहने वाले प्रत्याशी) को कुछ पद गोपनीय जैसे (उपाध्यक्ष/सचिव) पर दिया जाता है। जिससे उनमें गुटबाजी एवं द्वेषभावना न उत्पन्न हो और सभी एक टीम भावना के साथ कार्य करें। निर्वाचन की प्रक्रिया अगस्त माह में प्रारम्भ की जाती है। इसकी निर्वाचन के सम्बन्ध में प्रार्थना–पत्र खण्ड शिक्षा अधिकारी महोदय को अनुमति हेतु दिया जाता है। चुनाव की तिथि 15 दिवस पूर्व घोषित की जाती है। मतदान से दो दिन पूर्व नामांकन, एक दिन पूर्व शर्तों का सत्यापन, नाम वापसी तथा मतदान दिवस पर निकटतम विद्यालय के दो शिक्षकों की डियूटी लगायी जाती है। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया मध्यान्ह भोजन अथवा छुटटी के समय की जाती है। मतदान दिवस वाले दिन मध्यान्ह से पूर्व शिक्षण कार्य किया जाता है। मध्यान्ह उपरान्त मतदान सम्पन्न कराते हुए परिणाम घोषित किया जाता है। सभी प्रत्याशियों को पदानुसार शपथ ग्रहण करायी जाती है।

निहितार्थ/निष्कर्ष–

इस नवाचार से जुलाई से अक्टूबर तक छात्र उपस्थिति अच्छी रहती है। जिससे शिक्षा में काफी सुधार परिलक्षित होता है। जो बच्चें विद्यालय नहीं आना चाहते है उनकी निर्वाचन में रूचि होने के कारण एवं विद्यालय से सम्पर्क होने के कारण वह बच्चे विद्यालय आने लगते है।

प्रविधियो, गतिविधियों एवं अन्य नवाचार के परिणाम -

जो अध्यक्ष पद के प्रत्याशी छात्र व छात्रा घर–घर जाकर बच्चों को मनाते है और विद्यालय लेकर आते है। जो बच्चे बिल्कुल विद्यालय नहीं आते थे वह भी विद्यालय आना शुरू कर देते है तथा प्रत्याशी अन्य बच्चों का गृहकार्य भी पूर्ण कराते है और उनकी विद्यालय में उपस्थिति भी ध्यान से लगवाते है। हम बच्चों को विद्यालय में पढ़ाते है तथा प्रत्याशी उन्ही बच्चों को समय निकालकर घर पर जाकर बच्चों को पढ़ाने का प्रयास करते है। जिससे वह मतदान से वंचित न रह जाये। कुछ छात्र वोट डालने की वजह से पढ़ने की कोशिश करते है तथा नियमित विद्यालय आने का प्रयास करते है जिससे विद्यालय की उपस्थिति में काफी सुधार हो जाता है। जिन बच्चों को नाम लिखना नहीं आता था वह पढ़ना सीख गये तथा जिन बच्चों को पढ़ना आता है। वह अध्यक्ष पद के लालच में उनके शैक्षणिक स्तर में काफी सुधार परिलक्षित होने लगा। उनमें एक ललक उत्पन्न होती है कि अगली बार मैं भी चुनाव लडूँगा। क्योंकि चुनाव में प्रतिभाग करने वाले को पद मिलना निश्चित है।

विद्यालय के छात्रों पर इसका प्रभाव–

इस प्रयोग से विद्यालय में नामांकन, छात्र उपस्थिति एवं बच्चों के शैक्षणिक स्तर में काफी सुधार होने के कारण दूर ग्राम के अभिभावक अपने बच्चों को निःशुल्क एवं अच्छी पढ़ाई कराने के उददेश्य से विद्यालय में प्रवेश दिलाने हेतु इच्छुक रहते है। क्योंकि अभिभावकों का कहना है कि आपके विद्यालय में केवल दो ही शिक्षक होते हुए भी उच्च स्तरीय शिक्षा प्रदान की जाती है। आज की स्थिति में दूर ग्राम के बच्चों की संख्या 24 हो गयी है। जो बच्चे 3–4 किमी0 की दूरी से विद्यालय पढ़ने के लिए आते है।

क्रं0सं0	वर्ष	कक्षा–6 नामांकन
1	2016	22
2	2017	37
3	2018	46

इस नवाचार से 40 से 80 प्रतिशत शिक्षा की गुणवत्ता एवं छात्र उपस्थिति में वृद्धि हुई है। ग्राम में बिना मान्यता के संचालित विद्यालय न्यूनतम स्तर एवं बन्द हो गये। वर्तमान में इस नवाचार के परिणामस्वरूप विद्यालय की छात्र संख्या 104 हो गयी है। यह इस छोटे से ग्राम के लिए बहुत ही उत्साहजनक परिणाम है। जबकि ग्राम के निकट 5 किमी0 की दूरी में तीन राजकीय व दो मान्यता प्राप्त विद्यालय संचालित है। उसके बाद भी विद्यालय में नामांकन बढ़ना नवाचार के परिणाम को दर्शाता है। आज की स्थिति में विद्यालय के बच्चे ब्लॉक/जनपद/मण्डल की प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते है। जैसे–खेल कूद प्रतियोगिता, छात्र दक्षता परीक्षा, विज्ञान बाल कांग्रेस प्रतियोगिता, विज्ञान मॉडल प्रदर्शनी, विज्ञान शैक्षिक मेला, टी0एल0एम0 मेला, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओं कार्यक्रम का आयोजन, गृहशिल्प के विषय पर आधारित प्रयोगात्मक परीक्षा में प्रतिभाग करते है। प्रत्येक प्रतियोगिता में विद्यालय के बच्चों को स्थान प्राप्त होता है। जिसके कारण ग्रामवासी, विभागीय अधिकारियों को भी खुशी होती है। बच्चों की सफलता के परिणामस्वरूप ब्लॉक एवं जनपद स्तर पर मुझे भी कई बार सम्मानित किया जा चुका है।

भविष्यकालीन योजनाएँ

परिवर्तन के क्षेत्र–

1– विद्यालय में बच्चों के लिए छात्र दक्षता परीक्षा का आयोजन किया गया।

2– विद्यालय के बच्चों को मंच व्यवस्था के द्वारा नाटक मंचन, गायन प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता, मेंहदी प्रतियोगिता, खेल–कूल प्रतियोगिता, स्काउट–गाइड कैम्प का आयोजन, विजयी प्रतिभागियों को विशिष्ट अतिथि द्वारा पुरस्कार वितरण कराया जाता है।

3– विद्यालय में पूर्व छात्र सम्मान समारोह का आयोजन किया जाता है। विद्यालय के पूर्व छात्र यदि उच्च शिक्षा एवं पद पर आसीन होते है तो उन्हें विद्यालय में बुलाकर विशिष्ट अतिथि के द्वारा सम्मानित किया जाता है।

4–न्याय पंचायत स्तरीय खेल–कूद प्रतियोगिताओं की मेजबानी करने से ग्रामवासियों को खुशी होना तथा विद्यालय के प्रति उनका लगाव बढ़ने लगा है।

5– विद्यालय के कुछ बच्चों को एक समय में कक्षा–6 में अपना नाम लिखना नहीं आता था। वह बच्चे हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट की परीक्षा में अच्छे अंकों से पास होकर ग्राम में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त कर रहे है।

स्वयं की स्कूल लीडर के रूप में भूमिका

मैं आज अपने आपको बहुत ही भाग्यशाली महसूस करता हूँ और मै इस विद्यालय से बहुत खुश हूँ। मैंने सहायक अध्यापक/इंचार्ज प्रधानाध्यापक/संकुल प्रभारी के पद का निर्वहन करते हुए मेरे नेतृत्व में जिन अध्यापकों ने कार्य किया है चाहे वह किसी अन्य जनपद के रहे हो चाहे वह जनपद के शिक्षक रहे हो। हमारे बारे में सपने में भी गलत नहीं सोच सकते है। मैंने कभी भी अपनी वरिष्ठता का अधिकार नहीं दिखाया है। आज कई शिक्षक मुझे अपना आदर्श मानते है और मेरे जैसा कार्य करने की कोशिश करते रहते है। जिससे उन्हें भी इसी प्रकार सफलता मिलती है और वह शिक्षक बड़े गर्व से कहते है कि ''यह सब अरूण सर की देन है। जो मैंने उनसे सीखा'' इस प्रकार मुझे बहुत खुशी होती हैं। जो कि मेरे साथ कार्य करने वाले शिक्षकों को उत्कृष्ट शिक्षक के रूप में सम्मान मिलता है। चाहे वह वर्तमान में किसी भी जनपद में कार्यरत हो।